HISTORY

B.A.PART-I (Hon's)

Paper-I (Ancient Indian History]

Unit-III, (Tripartite Struggle)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 47

"कन्नौज को लेकर हुए त्रिपक्षीय संघर्ष"

सातवीं शताब्दी में भारत में हर्षवर्धन का शासन था और उस समय कन्नौज पर कब्जा ही उत्तरी भारत का मुख्य नियंत्रक माना जाता था। उस समय भारत में तीन महत्वपूर्ण शक्तियाँ शासन कर रहीं थी, जो गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट और पाल के नाम से जानी जाती थीं। इन तीनों महाशक्तियों ने कन्नौज पर अपना आधिपत्य करने के लिए जो 200 वर्ष संघर्ष किया उसे त्रिपक्षीय संघर्ष कहा जाता है। अंतिम रूप से इस संघर्ष में गुर्जर-प्रतिहार जो गुजरात के प्रतिनिधित्व करते थे, विजयी हुए। हर्ष के शासन काल से ही कन्नौज पर नियंत्रण उत्तरी भारत पर प्रभुत्व का प्रतीक माना जाता था। अरबों के आक्रमण के उपरान्त भारतीय प्रायद्वीप के अन्तर्गत तीन महत्वपूर्ण शक्तियां प्रकाश में आई, ये थीं-

 # गुजरात एवं राजपूताना के गुर्जर-प्रतिहार,

 # दक्कन के राष्ट्रकूट एवं

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

 # बंगाल के पाल शासक।

कन्नौज पर आधिपत्य को लेकर लगभग दो सौ वर्षों तक इन तीन महाशक्तियों के बीच होने वाले संघर्ष को ही 'त्रिपक्षीय संघर्ष' कहा गया । इस संघर्ष में अन्तिम सफलता गुर्जर-प्रतिहारों को मिली।

त्रिपक्षीय संघर्ष (कन्नौज) के निम्न □□□□□ कारण हैं:-

हर्ष के बाद उत्तर भारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण नगर होना,

गंगा नदी के किनारे स्थित होने से व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होना,

गंगा तथा यमुना के बीच स्थित होने से उत्तर भारत का सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र होने के कारण एवं तीनों महाशक्तियों की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु उपयुक्त क्षेत्र होने के कारण संघर्ष का क्षेत्र बना।

त्रिपक्षीय संघर्ष में शामिल होकर राष्ट्रकूट शक्ति ने दक्षिण से उत्तर पर आक्रमण करने वाली एवं उत्तर भारत की राजनीति में दखल देने वाली दक्षिण की प्रथम शक्ति बनने का गौरव प्राप्त किया।

त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत प्रतिहार शासक वत्सराज ने की। जब इसने कन्नौज पर शासन करने वाले तत्कालीन आयुध शासक इन्द्रायुध को परास्त कर उत्तर भारत पर अपना आधिपत्य जमाने का प्रयास किया । संघर्ष के प्रथम चरण में प्रतिहार नरेश वत्सराज, पाल नरेश धर्मपाल एवं राष्ट्रकूट नरेश ध्रुव में संघर्ष हुआ । धर्म पाल को पराजित करने के उपरान्त वत्सराज को ध्रुव से संघर्ष हुआ, इसमें ध्रुव विजयी रहा। ध्रुव उत्तर भारत में अधिक दिनों तक न रुक कर वापस दक्षिण चला गया । राष्ट्रकूट नरेश से हारने के उपरान्त कुछ समय तक प्रतिहार शासक हतोत्साहित रहे ; इसी समय का फायदा उठाकर पाल नरेश धर्म पाल ने कन्नौज

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

पर आक्रमण कर इन्द्रायुध को अपदस्थ कर अपने संरक्षण में चक्रायुध को कन्नौज की राजगद्दी पर बैठाया।

पाल शासक की यह सफलता प्रतिहार शासको के लिए असहनीय थी। अतः वत्सराज के पुत्र नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया। धर्मपाल को परास्त करने के कुछ दिन बाद ही नागभट्ट द्वितीय को राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय से परास्त होना पड़ा ; इस पराजय से गुर्जर-प्रतिहारों की शक्ति काफी क्षीण हो गई। कालान्तर में पाल शासक धर्मपाल की मृत्यु के उपरान्त एक बार फिर नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर अधिकार का प्रयास किया, वह सफल भी हुआ और इसने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाई । संघर्ष के इस दौर में राष्ट्रकूट शासक आन्तरिक कठिनाइयों के कारण मैदान से बाहर रहे। राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष अपने पिता के समान पराक्रमी नहीं था । अतः राष्ट्रकूटों की भूमिका इस संघर्ष में समाप्त हो गई। कन्नौज अब पूर्णरूप से गुर्जर-प्रतिहार शासकों के अधिकार में आ गया, वैसे छिट-पुट संघर्ष 9वीं शताब्दी तक चलते रहे।

इस प्रकार कहा जा सकता है की कन्नौज के लिए इन शासकों का यह त्रिपक्षीय संघर्ष तीनों महाशक्तियों प्रतिहार, राष्ट्रकूट और पाल के लिए अत्यंत घातक और अंतकारी सिद्ध हुआ था। इस संघर्ष के परिणामस्वरूप प्रतिहार तो कन्नौज पर अपना आधिकार जमाने में सफल हो ही गए और साथ ही राष्ट्रकूट भी अपने पुराने शत्रु प्रतिहारों को समूल नष्ट करने में सफल हो गए थे। तृतीय संघर्ष का तीसरा पक्ष पाल, पहले ही इस युद्ध से अलग हो चुके थे इसलिए वो दोबारा अपनी खोयी शक्ति का पुनरुद्धार नहीं कर सके।

Dr Guddu Kumari (A.N.D College)

दूसरे शब्दों में कहा जाये तो इस संघर्ष ने उत्तर भारत के राजनैतिक पटल पर महाशक्तियों की गुटबाजी प्रथा को जन्म दे दिया था। यहाँ अब राजपूती शासक जो पहले राष्ट्रकूट के नाम से जाने जाते थे, का प्रभाव निरंतर बढ़ने लगा था। इसी के साथ हिंदुस्तान का उत्तरी यह भाग छोटे-छोटे क्षेत्रों में बंटने लगा था। परिणामस्वरूप पूरे भारत या केवल उत्तरी और केवल दक्षिणी भाग पर किसी एक राजा का आधिपत्य नहीं हो पाया था। इसी एकजुटता की कमी ने भारत में मुस्लिम आक्रमणकारियों के लिए ज़मीन तैयार कर दी थी।

!!!!!!!!! धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)